# ।। पखा पखी को अंग ।।
# मारवाडी + हिन्दी
# ( १–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुओ,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

## || अथ पखा पखी को अंग लिखंते ||

|| चोपाई ||

**पखा पखी मे सब जग बंधीयो || निर्पख बिरळा कोई ||**
**पख कूं छाड निरंतर खेले || सो जन पेला होई ||१||**

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बताते है,माया नश्वर है फिर भी ऐसे नश्वरमाया को ब्रम्हा, विष्णु,महादेव इस त्रिगुणीमाया ने जगत के सामने माया यह सत्य है यह महसूस होवे ऐसे उसके परचे चमत्कार करा दिये । इसकारण माया यह सत्य है यह जगत के लोगो को महसूस होने लगा । यह सभी सुख देनेवाली है ऐसा जगत को विश्वास आने लगा इसकारण माया के अलग अलग अनेक पक्ष ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने निर्मित किये है । ऐसी नश्वर माया को सच्ची समझकर माया के अलग अलग पक्षो में सभी जगत के लोगो ने स्वयम् को बांध लिया है । इसकारण माया के परे के सतस्वरुप को ये जगत के लोग जानते नही । ऐसे माया के परे के सतस्वरुप को कोई बिरला ही जानता है । जो मायाके अलग अलग पक्षो को छोड़ेगा और माया के परे के सतस्वरुप में सदा खेलेगा वही संत होनकाल के परे है ।।।१।।

**जंगम जोगी सेख सन्यासी || षट द्रसण जग सारा ||**
**सब ही मील दिसूं दिस खाँचे || ब्रम्ह एक निरधारा ||२||**

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जोगी,जंगम,सेवडा,सन्यासी,फकीर,ब्राम्हण और सभी जगतके लोग ये सभी जिस मायाके भक्तीमें लगे है उसको ही सत्य समजने लग गये । उस भक्तीमें ही मुझे महासुख सदाके लिये मिलेगा यह समजने लग गये । उसमे काल का दु:ख नही पड़ेगा ऐसा समजने लग गये । जैसा जोगीको जोग सच्चा लगने लगा तो ब्राम्हण को वेद सही लगने लगा । इसकारण जोगी जोग का पक्ष खिंचने लगा तथा ब्राम्हण वेद का पक्ष खिचने लगा । परंतु दोनो ने यह बिचार नही किया की,जोग यह माया से निपजा है और वेद भी माया से निपजा है और माया यह तो नश्वर है । वह कालके आधार पर फल दे रही है । ऐसी माया अलग अलग कैसे है तथा हमे सदा सुख कैसे देगी और कालके दु:ख से हमे कैसे मुक्त करेगी मतलब हमे अगर परमसुख चाहिये हो तो जो कालके परे है और संसारी को सुख देने में जिसे किसी के आधार की जरुरत नही ऐसे ब्रम्ह की भक्ती करनी चाहिये ।।।२।।

**षट सासत्र बेद पुराणा || अडे भिडे सूं माया ||**
**जन सुखराम ब्रम्ह सो ने:चळ || चले डिगे सो काया ||३||**

४ वेद,६ शास्त्र,१८ पुराण यह मायाके आधार से निर्मित हुये है । ४ वेद ब्रम्हा ने बनाये है । १८ पुराण वेदव्यास ने बनाये है । ६ शास्त्र जेमेनी,कणाद,कपील,पातंजली,व्यास,आदि ऋषी मुनीयो ने बनाये है मतलब सभी ६ शास्त्र,४ वेद,१८ पुराण की मूल नश्वर माया

है,अमर ब्रम्ह नही है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते माया यह नश्वर है,वह अलग अलग नही है (याने दिखने के लिये अलग अलग दिख रहे है परंतु है तो माया)फिर भी वह सच्ची है,यह भ्रम हो जाने के कारण एक शास्त्र स्वयम् को सत्य समज के दुजे शास्त्र को असत्य समज के उस शास्त्र के साथ भिड रहा है या अड रहा है । यह स्थिती वेदो में आपस में है और यह स्थिती पुराणों में आपस में है । कही कही पुराण वेद के साथ अड रहा है तो कही वेद शास्त्र के साथ भिड रहा है । ऐसे आपस में भिड्ने के तथा अड्ने के अनेक प्रकार हो रहे है । परंतु अड्नेवाले या भिड्नेवाले यह नही समजते की,इन शास्त्रों को बनानेवाले,वेद को बनानेवाले, पुराण को बनानेवाले यह सभी मायावी काया है । यह काया अमर नही है । यह काया जन्मती है और मरती है फिर ऐसी चलायमान माया से निश्चल स्थिती कैसे प्रगट होगी?निश्चल तो सिर्फ सतस्वरुप ब्रम्ह है । उसका शरणा ही हमे निश्चल स्थिती प्रगट करा देगा । इसलिये ऐसे बिना निशचलता के पंथो में,पक्षो में क्यों बंधे रहना?उसको सच्चा समजके झूठा ही क्यों झगड्ते रहना? इनको छोड्के सत पंथ को खोजकर महासुख में क्यों नही जाना यह जगत बिचार नही करती उलटा स्वयम् को पक्ष मे बांधके रखकर अमूल्य मनुष्य देह की खुवारी कर देती ।।।३।।

कुंडल्या ।।

नारायण सन्यास कहे ।। जोगी कहे आदेस ।।
नमष्कार रिषाँ कहयो ।। सदा पंथ मे बेस ।।
सदा पंथ मे ब्हेस ।। अल्ला फकिर सरावे ।।
बंदना मान्यो जैन ।। सत्त सत्त नाम्याँ भावे ।।
सुखराम रहीम कोई राम क्हे ।। आ पखा पखी की रेस ।।
नारायण सन्यास क्हे ।। जोगी क्हे आदेस ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इस जगतके साधूवोने इस माया से उपजे धर्मो को कैसे सच मानकर स्वयम् को बांध लिया है यह एक एक उदा. देकर बताते है ।

१) सन्यास धर्म–माया से उपजा है । उसका साधू,सन्यासी नारायण नारायण कहता है ।

२) जोगी धर्म–माया से उपजा है । उसका साधू एक दूजे को मिलने पे आदेश कहता है।

३) ऋषी–ब्रम्हा के पुत्र है । ब्रम्हा की उपज माया से है । ये आपस में मिलने पे नमस्कार कहते है ।

४) कुंडापंथी के साधू एक दूसरे से मिलने पे सदा बोलते है । यह धर्म माया से उपजा है।

५) फकीर–आपस में मिलने पे अल्ला कहते है । फकीर का धर्म माया से निकला है ।

६) जैन धर्मी साधू –यह माया है । ५ इंद्रियों को तपाते है । यह आपस में मिलने पे वंदना शब्द का प्रयोग करते है या कहते है ।

७) सतनामी पंथ का साधू –आपस में मिलने पे सतनाम सतनाम कहता है । सतनाम

शब्द यह माया है । यह ५२ अक्षरो में का है । यह ब्रम्ह शब्द नही है ।
८) फकीर –कुछ मुसलमान फकीर रहीम कहते है तो कुछ हिंदू साधू राम कहते है । रहीम और राम यह माया है वह ने:अंछर,सतस्वरुपी ब्रम्ह नही है ।
इसप्रकार जगत के साधूवो ने अलग अलग धर्म को सत समजके अपना अपना पक्ष बना लिया है । ये जगत के साधू यह नही समजते की,ये सारे धर्म माया की उपज है और माया तो नश्वर है फिर ऐसी माया की साधना करके साधू बनने से काल कैसे छुटेगा? अनंत सुखो को देश कैसे मिलेगा? ।।१।।

**कोईक राधा किसन कहे ।। कोईक सिताराम ।।**
**कोईक सिव सिव कर रहया ।। कोई लहे बिस्न को नाम ।।**
**कोई लहे बिस्न को नाम ।। किणी सत साहेब मान्यो ।।**
**दत्त कपल तत्त चीन ।। ब्रम्ह बिन और न जाण्यो ।।**
**सुखराम ब्रम्ह तो एक ही ।। अे पखा पखी का काम ।।**
**कोईक राधा किसन कहे ।। कोयक सिताराम ।।२।।**

१) कई साधू तथा जगत के लोग राधा किसन कहते । राधाकिसन यह मानवी देह का नाम है,यह सतस्वरुप ब्रम्ह नही है ।
२)कई साधू सिताराम का जप करते है । सिताराम यह भी मायावी देहका नाम यह सतस्वरुप ब्रम्ह नही है ।
३) कई साधक शिव शिव उच्चारते है । शिव यह इच्छा से उपजी हुई माया है । यह भी सतस्वरुप ब्रम्ह नही है ।
४) कुछ साधक विष्णू को नाम जपते है । यह विष्णू नाम विष्णूके देह को है । विष्णू यह माया है । वह सतस्वरुप ब्रम्ह नही है ।
५) कुछ साधक सतसाहब का जप जपते है । सतसाहब यह ५२ अक्षरो का नाम है । यह सतसाहब याने सतशब्द ब्रम्ह नही होता ।
इसप्रकार जगतके साधू और लोगो ने मायाको सतब्रम्ह समजकर अपना अपना पक्ष बना लिये है और आपसमें अड रहे है भिड रहे है और खिचातान कर रहे है । इसकारण सच्चा सतस्वरुप ब्रम्ह चिनने को मानवतन मिला था वह छूट जाता है और पखापखी के काम में मानवदेह गमा देते है । ये साधू यह नही सोचते की,दत्त,कपील ये पखापखी में क्यों नही अटके?वे भी साधना कर रहे है,वे भी मनुष्य तन में आये है परंतु वे तत्तब्रम्ह को चीन के(खोजके)उसमे अलमस्त लीन हुये थे । उन्होंने दुजे मायावी धर्म का क्यों त्यागन किया था?आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जो मनुष्य यह बिचार करेगा की दत्त और कपिल ने क्या किया? वही मनुष्य नश्वर माया के पक्षीय धर्म त्यागेगा और निरपक्ष ब्रम्ह का शरणा लेगा । ।।२।।

कवत ||

अे अेकी बिस्न करीम || राम रहीमी हे अेको ||
बीबी आदम हवा || सिव पारबती देखो ||
दोजख नरक न दोय || भिस्त बैकूंठ न दूजा ||
अेकी मिंदर मसीत || अेक अेकादसी रोजा ||
तसबी माळा अेक ही || यूं हिंदू मुसलमान ||
पखा पखी सुखराम के || ज्यांरी खांचा ताण ||३||

मायाके भरमानेसे हिंदू-मुस्लिम एकही वस्तु को दो कैसे मानते और आपस में कैसे खिचातान करते और एक ही बात को दो अलग अलग वस्तू कैसे समजते है इसपे यह साखी है ।

१) हिंदू- विष्णु को मानता है और मुस्लिम करीम को मानता है । मूल में करीम और विष्णू ये एक ही शरीर है,ये भिन्न शरीर नही है । ऐसे एक ही देह को हिंदू विष्णू करके कहता है और मुसलमान करीम करके पुकारता है और आपस में मेरा विष्णू करीम से बडा है ऐसा हिंदू कहते तो मुस्लिम मेरा करीम विष्णू से बडा है ऐसे खिचातान करते ।

२) ऐसेही राम और रहीम यह दोनो एक ही है । राम और रहीम यह दोनो एकही शरीर है,ये भिन्न शरीर नही है । ऐसे एक ही देह को हिंदू राम करके कहता और मुसलमान रहीम करके पुकारता और आपस में मेरा राम रहीम से बडा है ऐसा हिंदू कहते तो मुस्लिम मेरा रहीम राम से बडा है ऐसे खिचातान करते ।

३) ऐसे ही आदम हवा और शिव पार्वती एक ही है । आदम याने शिव और हवा याने पार्वती । आदम और शिव ये दो पिंड नही है,यह एक ही पिंड के दो नाम है ।
ऐसेही हवा याने पार्वती ये दो पिंड नही है यह एक ही पिंड है । एक ही पिंड्को मुस्लिम हवा करके पुकारते तो हिंदू उसी पिंड पार्वती करके पुकारते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते यह दोनो एकही पिंड का नाम न समजने के कारण हिंदू को शिव-पार्वती के नाम पे विश्वास आने के कारण उसे सच्चा और बडा मानते तो मुसलमान आदम हवा को सच्चा और बडा मानते और आपस में हिंदू हमारा शिव-पार्वती श्रेष्ठ है और आपका हवा आदम श्रेष्ठ नही है ऐसे विवाद करते । इसीप्रकार मुस्लिम हवा आदम को श्रेष्ठ समजते और शंकर पार्वती को कनिष्ठ समजते और फालतू ही आपस में विवाद खडा करते । इसीप्रकार,

३) दोजख और नरक दोनो एक ही जगह का नाम है ।

४) भेस्त और वैकुंठ ये अलग अलग नही है,यह भी एकही पुरी का नाम है ।

५) मंदिर और मस्जिद यह एक है,अलग अलग नही है मंदिर में माया के देवता की भक्ती की जाती तो मस्जिद में भी मायावी देवता की ही भक्ती की जाती ।

६) एकादसी,रोजा ये एक है । एकादसी करने पे हिंदू को जो फल लगता वही फल मुसलमान को रोजा करने पे लगता । दोनो के फल में कोई फरक नही रहता ।
७) ऐसेही तसबी और माला यह एक है । मुस्लिम तसबी फेरता तो हिंदू माला फेरता मुस्लिम को तसबी फेरने पे जो फल लगता वही का वही फल हिंदू को माला फेरने से प्राप्त होता । परंतु हिंदू और मुस्लिम इन चिजों का सही अर्थ नही समजते और हिंदू अपना पक्ष बना लेता एवम् मुस्लिम अपना पक्ष बना लेता और आपस में दोनो फालतु ही भिड्ते,अड्ते और दु:ख पाते । इस अड्ने भिड्ने में सच्चा परमात्मा भूल जाते और काल के वश जैसे आजतक बसे थे वैसे बसे रहते और जुलमी काल का कष्ट भोगते रहते ।।।३।।

सासा गुण के काज ।। नाँव साहिब सो दिया ।।
ऊठ बेठ गम जाण ।। नाँव ओऊँ धर लिया ।।
नाँव राम इण होय ।। जोय रमता सब माही ।।
सोहँ इण प्रकार ।। सकळ मे रहया समाई ।।
ओऊँ सोहँ राम सुण ।। अे अेसे सब होय ।।
याँ ऊपर सुखराम के ।। प्रमात्म कूं जोय ।।४।।

नाम कैसे रखे गये ।
१) श्वास का गुण हंस में डालता इसलिये डालनेवाले का नाम साहेब दिया ।
२) माया में उठता बैठता इसलिये ओअम नाम रख दिया ।
३) राम–सबमे रमता इसलिये रामनाम रख दिया ।
४) सोहम सबमे समाता है इसलिये सोहम कह दिया या रख दिया ।
इसप्रकार साहेब,ओअम,सोहम,रामनाम,रखे गये । इन नामोके परे जो नाम है जो शब्द में नही आता उस परमात्मा को देखो ।।।४।।

निरंजण क्हे ईण रीत ।। ताही अंजंण नही होई ।।
निराकार सो इम ।। द्रष्ट पर चडे न कोई ।।
आरब इसका नाम ।। आत जाता पर दिया ।।
अलख क्हे ईण रीत ।। जक्त लख सही न किया ।।
निरंजण आरब अलख रे ।। अे सब अेकी जाण ।।
याँ ऊपर सुखराम के ।। तांकी करो पिछाण ।।५।।

उसे निरंजन इस रीती से कहते है,कि उसे अंजन(इन्द्रियाँ)नही है। इसलिए उसे निरंजन कहते है और उसे निराकार इसलिए कहते है,कि(उसे आकार नही है ।)(उसको रूप न होने से),वह दृष्टि मे नही आता है ।(ऐसे नाम है,कि)वह आते हुए और जाते हुए(साथ मे रहता है।) पर(दूसरा)दिया और उसे अलख इसलिए कहते है,कि उसे लखकर(देखकर),

सही(कबूल) कोई भी नही किया ।(कारण वह किसी को भी लखायी आया नही । इसलिए उसे अलख कहते है । निरंजन,आरब्ब,अलख ये सभी एक ही है । परन्तु इनके उपर सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । कि जो है,उसकी पहचान करो । ।।५।।

प्रमेस्वर ईण रीत ।। पलक मे माँड ऊपाई ।।
अबनासी कहे अेम ।। ग्रभ मे पडयो न काई ।।
आद आप ही आप ।। तद अजरावण बागा ।।
क्रता कहीये अेम ।। बिध करणे सब लागा ।।
दोय नाँव प्रब्रम्ह का ।। दोय आतम का होय ।।
सत्तगुर बिन सुखराम के ।। न्यारा लखे न कोय ।।६।।

पिता पारब्रम्ह को हमारे सरीखे अंजन याने इंद्रीये नही है इसलीये उसे निरंजन कहते है । उस पारब्रम्ह को माया के दृष्टीसे समजेगा ऐसा आकार नही है इसलिये उसे निराकार कहते है । वह आते हुये व जाते हुये सांसामे रहता इसलिये उसे आरब कहते है । पारब्रम्ह पिता को अलख इसलिये कहते है कि वह चर्म चक्षु से लखे नही जाता । पिता पारब्रम्ह को परमेश्वर इसलिये कहते है कि उसने एक पल मे सृष्टी बनाई । उसे अविनाशी इसलिये कहते है कि वह जीव के समान गर्भ मे पड्कर माया का विनाशी शरीर प्राप्त नही करता व सौ वर्ष बाद मरता नही । उसे आद इसलिये कहते है वह हमारे जीव सरीखा गर्भमे आकर जन्मा नही मतलब वह आदिमे जैसा था वैसा ही आज भी है । वह हमारा शरीर जैसे बुढा होकर या जलके नष्ट हो जाता वैसे वह कभी बुढा या जलके नष्ट नही होता इसलिये उसे अजरावण कहते । उसे कर्ता इसलीये कहते कि उसीने सभी मायावी विधीयाँ बनाई । इसप्रकार निरंजन,निराकार,आरब, अलख,परमेश्वर,अविनाशी, आद अजरावण,कर्ता ये सभी प्रकारके नाम से संसारी पारब्रम्ह पिता जाणे जाता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि उसके उपर सतगुरु पारब्रम्ह है उसे जाणो । इसीप्रकार सतगुरु पारब्रम्ह ग्यान रुप का होने कारण उसे अंजन नही रहते इसलिये सतस्वरुप पारब्रम्ह को भी निरंजन कहते उस ग्यान विग्यान सतस्वरुप पारब्रम्ह को माया के देह समान आकार नही रहता इसलिये वह सतस्वरुप पारब्रम्ह माया के समान आकारी न होते निराकार है । सतस्वरुप पारब्रम्ह यह हंसको आते जाते सांस मे साथ मे रहकर ग्यान सिखाता इसलिये वह आरब है । सतस्वरुप पारब्रम्ह यह ग्यान विग्यान होने कारण कभी भी माया के समान देह धारण नही करता इसलिये यह माया समान चर्म चक्षुसे दिखता नही इसलिये वह अलख है । सतस्वरुप पारब्रम्ह पिता पारब्रम्ह,त्रिगुणी माया,आत्म ब्रम्ह सभी को ग्यान देकर कार्य करता इसलिये वह परमेशवर है । सतस्वरुप पारब्रम्ह यह ग्यान विग्यान स्वरुप होनेकारण गर्भमें कभी नही आता इसलिये अविनाशी है । ग्यान विग्यानके रुपका सतस्वरुप पारब्रम्ह यह आदिसे है इसलिये उसे आद कहते है ।

ग्यान विग्यानी सतस्वरुप पारब्रम्ह ग्यान विग्यानी होने कारण कभी माया समान बुढा या जल नही सकता इसलिये वह अजरावण है । ग्यान विग्यानी सतस्वरुप पारब्रम्ह यही होनकाल व जीवको ग्यान देता इसलिये वह ग्यान कर्ता है । इसप्रकार सतगुरु पारब्रम्ह भी निरंजन,निराकार,आरब,अलख,परमेशवर, अविनाशी,आद अजरावण कर्ता है । माया के चक्षु व मायाके ग्यान के समजसे पिता पारब्रम्ह व सतस्वरुप पारब्रम्ह ये दोनो भी निरंजन ,निराकार ,आरब ,अलख,परमेशवर,अविनाशी,आद, अजरावण कर्ता ऐसे एक सरीखे दिखते है । परंतु पिता पारब्रम्ह व सतगुरु पारब्रम्हमे बहोत अंतर है । पिता पारब्रम्ह यह माया है माया मे रचामचा है जिवोके लिये मारणहार काल है । वह जिवोको ८४ लक्ष योनीके दु:खमे नरकमे डालनेवाला क्रुर महाकाल है । तथा सतगुरु पारब्रम्ह यह मायाके परे है व पुर्ण ग्यान विग्यान है वह वैरागी है । वह जिवोके लिये कालसे मुक्त करानेवाला तारणहार सतगुरु है । वह जीवोको ८४ लाख योनीके दु:ख से निकालकर महासुख मे डालनेवाला दयावान सतगुरु है । इस प्रकार पिता पारब्रम्ह व सतगुरु पारब्रम्ह ये दोनो अलग अलग है । यह फरक सतग्यानसे समजता है । यह फरक ब्रम्हा,विष्णु,महादेव अवतार इनके त्रिगुणी मायावी ग्यानसे कभी नही समजता इन मायावी ग्यानसे पारब्रम्ह पिता ही पिता भी है व सतगुरु भी है ऐसा ही समजता । मायावी ग्यासे सतस्वरुप ब्रम्हांड मे दो सरीखे नामवाले पारब्रम्ह है तथा सतस्वरुप पारब्रम्ह यह पिता पारब्रम्ह से अलग है ऐसा कभी नही समजता । एक पारब्रम्ह पिता पारब्रम्ह है व दुजा पारब्रम्ह सतगुरु पारब्रम्ह है ऐसा पारब्रम्ह पारब्रम्हमे का फरक सतगुरु पारब्रम्हके देहधारी सतगुरु मिलने पे ही समजता । इसीप्रकार दो पारब्रम्ह समान दो नाम के आत्मा है । एक आत्मा माया के विषयवासना मे रचीमची ऐसी जिवात्मा है तो दुजी माया के विषयवासनासे पुर्ण मुक्त ऐसे ग्यान वैरागी ब्रम्हात्मा है । यह हंस जिवात्मा के रुप मे पिता पारब्रम्ह के देश रह कर दु:खपे दु:ख भोगता व वही हंस सतगुरु शरण जाकर ब्रम्हात्मा बननेपे सतगुरु पारब्रम्ह मे जाता व सतगुरु पारब्रम्ह मे रहकर सुख पे सुख भोगता ।।।६।।

इंद व छंद ।।

**सामी कहे सिरे पंथ हमारो ।। जोगी ही जोरस रेस बखाणे ।।**
**जंगम ओर फकीर जलाली ।। अल्ला सरोबर और न आणे ।।**
**जतीस पंथ सराय मरे जहुं ।। बिप्र बेद बे ईस बखाणे ।।**
**पास गयाँ सुखराम क्हे ।। सो तो पखे की बात ।। पखे दिस ताणे ।।७।।**

जगत में स्वामी याने संन्यासी कहते है की,सभी पंथ में हमारा पंथ ही श्रेष्ठ है तो जोगी जोर देकर कहते है की,हमारा पंथ ही सरसा है याने उँचा है । उनका पंथ महादेव से आने के कारण उँचा है ऐसा कहते । ऐसेही जंगम कहते है की,हमारा ही पंथ अच्छा है । फकीर और जलाली कहते है की,हमारे अल्ला की बराबरी दूजा कोई नही कर सकता

क्यो की उस अल्लाने ही सबको पैदा किया है । जती अपने ही पंथो की सराहना याने शोभा करके मरते है याने शोभा करते करते उनका मनुष्य देह छुट जाता है । ऐसेही ब्राम्हण वेद यही ईश्वर है ऐसा वर्णन करते है याने वेदो में की करणीयाँ करनेसे ही परमात्मा मिलेगा याने वेदो मे ही परमात्मा है ऐसे कहते है । इसलिये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,आप जिनके भी पास जावोगे वह अपनेही पक्ष की बात अपनी ही तरफ खिंचकर कहेगा ।।।७।।

**जती फकिर सन्यास बण्यो जूं ।। कोऊस कान ज आण फडावे ।।**
**कुंडे मे बेस सबे भिन्न खोई ।। गिरे सो मांड बना बिच जावे ।।**
**तपस्या ही त्तप अनेक हूं हुन्नर ।। साच बिना कोई भावे ज्यूं गावे ।।**
**सोच बिचार कहे सुख देवजी ।। भाग बिना कण काहु न पावे ।।८।।**

कोई जती हुवा है,कोई फकीर हुवा है,कोई संन्यासी बना है तो कोई कान फाड्कर उसमे मुद्रा पहनकर आयस बना है और कितने ही कुंडापंथी एक ही कुंडी में बैठकर कोई किसी की उंच या निच की भिन्नता नही रखता है याने सभी जन एक ही कुंडामें मांस,दारु,मछ्ली खाते है । कोई गृह में याने संसार में रहते है तो कोई बन में जाता है तो कोई तप करता है । ऐसे अनेक हुन्नर करते है परंतु भाग्य न होने के कारण सत्य परमात्मा को गाते नही । इसकारण सत्य परमात्मा के बिना माया को भजते ऐसे किसी ने भावे ज्यू भजा(जैसे-बन में गया तप किया) तो भी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सोच बिचार करके कहते है की,उन्हें सतब्रम्ह मिलेगा नही और उनका होनकाल छुटेगा नही ।।।८।।

**पंथ की सोभ करे नर अेसे ।। आप की माय को डाकण केहे ।।**
**जग सो जात सबे सुख मानर ।। लिल बिलास सबे कर रेहे ।।**
**ताही सूं काम पडे तिण बेळां ।। सोई आधीन श्राय मरे हे ।।**
**अे से जूं सब कहे सुख देवजी ।। ओर की बात कुँ कान न देहे ।।९।।**

सभी लोग अपने अपने पंथ की शोभा इस तरह से करते है की,उस पंथ में कुछ झूठापन या कोई बुरी बात रही तो भी उस पंथ को अच्छा ही कहते है। जैसे-किसीकी माँ डाकीणी रही तो भी वह कहता नही की मेरी माँ डाकीणी है और उसे उसकी माँ के डाकीणी होने की जानकारी मालूम रही तो भी वह कबूल नही करेगा । इसीतरह से अपने अपने पंथ में बुरी बात रही तो भी उसकी शोभा ही करता है । जैसे-संसार में उस जाती के रिवाज के जैसे लिला-विलास करके उस अपनी जाती में ही सुख मानकर मस्त रहता है । अपनी जाती में कुरीती याने बुरी रीती रही तो भी जाती को नही छोड्ता है और दूसरे की जाती की अच्छी रीती ग्रहण नही करता है । अपनी जातीसे काम पड्नेपर उस समय वह अपनी जाती के आधीन होकर अपनी ही जाती की शोभा करके मरता है । वैसे ही ये सभी जन अपने अपने पंथकी शोभा करके मरते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ऐसे

 || राम नाम लो, भाग जगाओ ||

ही यह सभी अपने अपने पंथ की बातें कहते है और दूजे पंथ की बाते सुनते नही ।।।९।।

आप की बात इसी बिध केहे ।। ओर को ग्यान सुण्यो नही आवे ।।
गांव सो स्हेर मुलक बदेसां ।। देख्याँ बिना क्हा भेव बतावे ।।
पार को धन सुखो दुःख पीडा ।। बुझ कर्‍याँ किण रीत कहाई ।।
युं सोच बिचार कहे सुखदेवजी ।। ओर की सोभ इसी बिध नाई ।।१०।।

अपने पंथ की बात ऐसे कहते है की,जैसे उसने दूसरो के ज्ञान सुने ही नही और दूसरो का ज्ञान उसे आता भी नही इसलिये वह अपनी ही बात बताते रहता है । जैसे–कोई भी जिसने केवल अपना गाँव ही देखा है और दूसरे शहर या विदेश देखा नही तो वह वहाँ की बातें कैसे बतायेंगा? दुसरा शहर तथा विदेश देखा नही इसलिये वह उसका भेद बता नही सकता है । वैसेही अपने पंथके पक्षमें बंधे होने के कारण दूसरे विपक्ष के पंथ का भेद कैसे बतायेगा? वैसेही दूसरो का धन और दूसरो का सुख–दुख और दुसरे की पिडा पुछे बिना वह किस तरह से बतायेगा? वैसेही दूसरो का भेद क्या बता सकेगा? इसीतरह दुसरे पंथ और धर्म देखे बिना उसका ज्ञान क्या मालूम होगा? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बिचार करके कहते है की, इसतरह से दुसरो की शोभा करते नही आती ।।।१०।।

।। इति पखा पखी को अंग संपूरण ।।